काव्य के हेतु / कारण

काव्य के हेतु का अर्थ है 'काव्य के कारण'। अर्थात किन कारणों से काव्य की रचना की जाती है या ऐसे कौन से कारण है जिन कारणों से काव्य रचना हो सकती है। गुलबराय ने काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है।-- " हेतु का अभिप्राय उन साधनों से है जो कि कवि की काव्य रचना में सहायक होते है"।काव्य के हेतु कौनसे हो सकते है इस संबंध में विद्‌वानों में मतभेद दिखाई देता है। अधिकतर विद्‌वानों ने शक्ति (प्रतिभा) व्युत्पत्ति और अभ्यास इन तीन हेतुओं को स्वीकार किया है। काव्या निर्मिति के लिए इन तीन हेतुओं का होना नितांत आवश्यक है। इन तीनों में से एक भी हेतु नहीं होगा तो काव्य रचना नहीं होगी इसलिए संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी आचार्यों ने शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य के हेतु मान लिया ह। इन तीन हेतुओं का विश्लेषण हम निम्नानुसार कर सकते हैं...

शक्ति/ प्रतिभा : --- शक्ति का अर्थ 'प्रतिभा' है ताकत नहीं। प्रतिभा मनुष्य की एक जन्मजात दैवी शक्ति है। जिससे उसके अंतर्गत नवीन वस्तुओं की रचना की स्फुर्ति जागृत होती है। ध्वन्यालोक के प्रमाण से 'अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमता प्रज्ञा है'। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि नूतन रचना की स्फूर्ति देने वाली शक्ति प्रतिभा है। प्रतिभाशक्ति नई - नई वस्तुओं का, साहित्य का निर्माण करती है, इसलिए तो कवि द्‌वारा भिन्न भिन्न प्रकार की कविताएं तथा साहित्य का निर्माण किया जाता है।

आचार्यों का कहना है कि प्रतिभा एक जन्मांतरीय संस्कार है इसलिए तो राम कथा पर आधारित जितने भी काव्य ग्रंथ लिखे गए उनमें सर्वश्रेष्ठ तुलसीदास क्यों माने गए?

कृष्ण काव्य भी अनेक लिखे गए उनमें सूरदास को ही सर्वोच्च स्थान मिला है तथा कालीदास ने 'मेघदूतम' जैसी रचना लिखी। इन सब का कारण है 'प्रतिभा शक्ति'। इसलिए आचार्य वामन कहते हैं –

"कविता बीज प्रतिभानाम "। अर्थात "काव्य का बीज प्रतिभा है"।

'राजशेखर' ने प्रतिभा के दो प्रकार माने हैं --

1) कारयित्री प्रतिभा
2) भावयित्री प्रतिभा

1) **कारयित्री प्रतिभा : --** कवि कर्म की सहयोगीनी तथा कवि का उपकार करने वाली 'कारयित्रि प्रतिभा' होती है। इस के तीन भेद होते हैं ..

1.1 सहजा : -- सहजा प्रतिभा स्वाभाविक होती है, जन्मजात होती है। अर्थात जन्मजात संस्कार उसमें होते है।

1.2 आहार्या : -- वर्तमान जन्म के संस्कारों से उत्पन्न 'आहार्या प्रतिभा' होती है।

1.3 औपदेशिकी : -- मंत्र तंत्र आदि साधनों से उत्पन्न 'औपदेशिकी प्रतिभा' होती है।

2) **भावयित्री प्रतिभा : --** भावक या समालोचक की उपकार करने वाली प्रतिभा का नाम भावयित्रि प्रतिभा है। यह प्रतिभा कवि के श्रम कों सफल बनाती है।

उसी प्रकार रूद्र ने भी प्रतिभा के दो प्रकार माने हैं---

2.1 सहजा : -- सहजा स्वाभाविक होती है।
2.2 उपाध्या : -- उपाध्या शास्त्राध्ययन से उत्पन्न होती है।

व्युत्पत्ति : -- (ज्ञान) व्युत्पत्ति का अर्थ है 'ज्ञान', 'पांडित्य' या 'विद्‌वत्ता'। आचार्य मम्मट ने व्युत्पत्ति को 'निपुणता' कहा है। यह निपुणता चराचर जगत के निरीक्षण और काव्यदि के अध्ययन से प्राप्त होती है।

प्रतिभा अगर काव्य का बीज है तो व्युत्पत्ति उस बीज का विकास करने वाली सखी है। प्रतिभा शक्ति है और ज्ञान नहीं ऐसी स्थिति में काव्य रचना होगी लेकिन निकृष्ट दर्जे की।

व्युत्पत्ति कवि को निरीक्षण तथा अध्ययन के लिए मजबूर कर देती है तभी तो साहित्यकारों को विविध काव्य विषय मिलते हैं। काव्य विषय को उचित शब्द संगठन से अभिव्यक्त करना भी आवश्यक है उसके लिए अच्छे ज्ञान की आवश्यकता होती है इसलिए किसी अच्छे काव्य का उत्कर्ष कवि की प्रतिभा शक्ति के साथ साथ व्युत्पत्ति पर भी निर्भर रहता है।

अभ्यास : -- काव्य का तिसरा एवं अंतिम हेतु है 'अभ्यास'। प्रतिभा के साथ अभ्यास सम्मिलित होने से काव्य रचना सुकर एवं सुंदर हो जाती है। अभ्यास का अर्थ है **'बार-बार प्रयोग'** या 'निरंतर प्रयोग करते रहना अभ्यास है'।

अभ्यास के कारण हम हमेशा नई - नई बातों से परिचित हो जाते हैं। भली - बुरी, उपयुक्त - अनुपयुक्त, सही - गलत आदि बातों को पहचान सकते हैं। अभ्यास ही नहीं होता तो साहित्यकार उच्च कोटि की रचना नहीं कर पाता।

समाधि : -- राजशेखर ने समाधि को काव्य हेतु स्वीकार किया है। वे 'मन की एकाग्रता को महत्व देते हैं। समाधि मतलब **'मन की एकाग्रता'**।

कवि के लिए समाज ही एक उत्कृष्ट साधन है समाधि आंतरिक मानी जाती है और अभ्यास भाइयों माना जाता है इसी समाधि को वामन आवर्धन शब्द से अभिजीत करते हैं किंतु यह समाधि अभ्यास का ही दूसरा रूप है समाज के लिए भी पहले अभ्यास की आवश्यकता है फिर भी इसे काव्य हेतु स्वीकार करने में कोई दोष नहीं है।

उपर्युक्त विवेचन के बाद निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि भारतीय काव्यशास्त्र के क्षेत्र में काव्य के हेतुओं पर पर्याप्त विचार हुआ है और वे हेतु प्रतिभा व्युत्पत्ति, अभ्यास और समाधि है। सभी हेतु परस्पर पूरक है। एक के अभाव में दूसरा अपूर्ण है। अतः हम कह सकते हैं कि प्रतिभा काव्य का कारण है, व्युत्पत्ति विभूषण है और अभ्यास उसके सृजन को बढ़ाने वाला है।